PEN2PRINT®
Edupedia Publications Pvt Ltd

साहित्य संहिता

Available at http://www.sahityasamhita.org/

ISSN 2454-2695
Volume 03 Issue 03
January 2017

स्त्री मुक्ति का स्वर व 'चाक' उपन्यास

नीरजा सिंह

साहित्य के क्षेत्र में विमर्श की संकल्पना आधुनिक काल की देन है | आज साहित्य में स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, सत्ता विमर्श, जाति विमर्श की संकल्पनाएं काफी रूढ़ होती हुई दिखाई देती है| इसमें भी स्त्री विमर्श को लेकर बड़े पैमाने पर चर्चा व साहित्य रचना हो रही है|स्त्रियों के प्रति सदियों से चले आ रहे शोषण व दमन के प्रति स्त्री की जागरूकता व सजगता ने साहित्य के क्षेत्र में स्त्री विमर्श को जन्म दिया है| आत्म चेतना, आत्म सम्मान, स्वाभिमान, आत्म-गौरव, समानता का दूसरा ही नाम है-स्त्री विमर्श| स्त्री को अपने अस्तित्व बोध ने विमर्श की प्रेरणा दी है| आज पुरुष की सत्ता और एकाधिकार के माहौल से स्त्री को बाहर लाने का श्रेय स्त्री विमर्श को ही दिया जा सकता है| डॉ. अर्जुन चव्हाण के अनुसार- "यह स्त्री विमर्श अपनी अस्मिता की पहचान स्वर्ग की चिंता अस्तित्व बोध और अधिकार को जलाने और बतलाने का विचार चिंतन है|यह सदियों से स्थापित पुरुष मानसिकता का तर्पण है, भावुक स्त्री का समर्पण नहीं |"[1]

समकालीन हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श की अपूर्व पहल दिखाई देती है| अपने प्रति जागरूकता व अपने अधिकारों के प्रति

ISSN 2454-2695
Volume 03 Issue 03
January 2017

सजगता ,व्यक्तित्व की चेतना ही इस विमर्श की मुख्य शक्ति है जो समकालीन हिंदी साहित्य की लगभग सभी विधाओं में पर्याप्त मात्रा में परिलक्षित हो रही है| स्त्री विमर्श को बढ़ावा देने वाली महिला साहित्यकारों में मृदुला गर्ग, प्रभा खेतान, दीप्ति खंडेलवाल, नासिरा शर्मा, राजी सेठ, चित्रा मुद्गल शिवानी, मैत्रेयी पुष्पा इत्यादि प्रमुख है |

इसी कड़ी में मैत्रेयी पुष्पा जी का 'चाक' उपन्यास स्त्री विमर्श को एक नया आयाम व स्वरूप देता हुआ उपन्यास है| यह उपन्यास बृज क्षेत्र संबंधित यथार्थ व परिस्थिति को चित्रित करता है| उपन्यास के केंद्र में अलीगढ़ शहर की इगलास तहसील का अतरपुर गांव और वहां स्थित जाट परिवार है| अतरपुर गांव का सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य को प्रस्तुत करते हुए लेखिका ने नारी जीवन के विविध पक्षों को ईमानदारी व वास्तविकता के साथ चित्रित किया है | डॉ मधु सिंधु के अनुसार- "उस गांव अतरपुर की औरतों की पुरुषीय अहम्, शील और सतीत्व की रक्षा के नाम पर बलि चढ़ाई जाती है| इस गांव के इतिहास में ऐसी अनेक दास्तानें दर्ज हैं| रुक्मणी रस्सी के फंदे से झूल जाती है| रामदेई कुएं में कूद जाती है | नारायणी करबन नदी में समाधि लेती है| यहां हर हालत में पुरुष की जात बस अपनी ही सगी होती है |"[2]

ISSN 2454-2695
Volume 03 Issue 03
January 2017

उपन्यास में लेखिका ने बताया है कि ये स्त्रियां अपने शील और सतीत्व के नाम पर छली जाती रही है, अपने आत्म सम्मान के साथ समझौता करती हुई नष्ट होती रही है| और उन्हें नष्ट करने वाले पुरुष हर प्रकार के सामाजिक दंड विधान से बाहर रहते आए हैं| ऐसे इतिहास वाले गांव में कर्मवीर की पत्नी, साधजी और हुकुम कोर की बहू, डेरिया और धान सिंह जैसे वरिष्ठ जाटों की भाभी रेशम भरी जवानी में पति की मृत्यु के 5 महीने बाद गर्भ धारण करती है और अपने प्रथम विद्रोह का परिचय देती है | यही नहीं वह उस गर्भ के साथ सम्मान पूर्वक जीना चाहती है और समाज के मानदंडों को तोड़ती हुई साहसपूर्ण कदम उठाती है| पत्नी की मृत्यु के बाद पति दूसरी शादी कर सकता है और पत्नी जीवन भर उसके दुख में डूबी रहे, यह रेशम को स्वीकार नहीं है| रेशम का मानना है कि क्या विधवा होने के बाद स्त्री का जीवन रुक जाता है? क्या पति के मरने के साथ-साथ ही नारी देह की अग्नि बुझ जाती है? इस संदर्भ में वह अपनी सास से कहती है- "मैया, तुम मेरे पीछे क्यों पड़ गई हो? मेरे चाल चलन की झंडी फहराना जरूरी है? बिरथा ही छानबीन करने में लगी हो| आज को तुम्हारा बेटा मेरी जगह होता तो पूछती कि तू किस के संग सोया था? अब उसकी बांह गह लो | मेरे मरे पीछे तेरहीं तक का भी सबर नहीं करता और ले आता दूसरी | तुम खुश हो रही होती कि पूत की उजड़ी जिंदगी बस गई | पर मेरा फजीता करने पर तुली हो |"[3]

ISSN 2454-2695
Volume 03 Issue 03
January 2017

विडंबना यह है कि रेशम अपने इस विद्रोह को अंजाम नहीं दे पाती है, क्योंकि परिवार वालों के लिए और समाज के लिए वह एक बदचलन औरत बनकर रह जाती है और इसीलिए अपने जेठ डेरिया के हाथों में मारी जाती है| कोई पुरुष व समाज का कोई व्यक्ति इस अमानवीय कृत्य के प्रति खड़ा होने का हिम्मत नहीं रखते हैं, किंतु उसके विरोध में खड़ी होती है एक स्त्री-रेशम की फुफेरी बहन सारंग नैनी ,जो बहुत ज्यादा पढ़ी-लिखी तो नहीं है फिर भी उसमें साहस है, गजब का संकल्प है, आत्मसम्मान का भाव है और उसके संकल्प को अंजाम देता है स्कूल में नए आए शिक्षक श्रीधर प्रजापति | उपन्यास में सारंग ही चाक पर चढ़ा हुआ वह बर्तन है जो श्रीधर प्रजापति से सहयोग और प्रेरणा प्राप्त कर एक साहसपूर्ण उमंग के साथ आगे बढ़ रही है | सारंग में अन्याय से लड़ने, उसका मुकाबला करने, नारी के अधिकारों के लिए अपनी जान तक देने की हिम्मत है और उस हिम्मत के सहारे उसने गहरी संवेदनशीलता विवेक और संगठन की क्षमता पायी है | लेकिन यह सारी खूबियां उसमें कच्चे रूप में है, इसे पक्का व सही रूप देने के लिए श्रीधर कुम्हार का काम करता है| श्रीधर के व्यक्तित्व के आगे वह झुक जाती है और समर्पित होती है| नारी संहिता की समस्त मान्यताओं को चुनौती देती हुई वह श्रीधर से देह संबंध स्थापित करती है |पर उसे यह सम्बन्ध अनैतिक नहीं लगता समर्थ, वह इसे समर्पण का नाम देती है, उसे वह प्रेम की सहज स्थिति ही लगती है और इसीलिए इस कार्य के प्रति उसके मन में किसी प्रकार

ISSN 2454-2695
Volume 03 Issue 03
January 2017

का पश्चाताप या ग्लानि का भाव नहीं है| उसका विचार है- "अपना कहने के लिए कुछ भी नहीं.....हरी-भरी देह है जो एक दिन सूख जाएगी, मुरझा जाएगी| पतझड़ और सूखे की रखवाली कौन करता है? मुझ पर किसी का पहरा न होगा तब| क्योंकि वह ताकत अब खत्म हो चुकी होगी जो अपने संसर्ग से किसी के रंगों में हौसले का तूफान उतार दे |"[4]

उपन्यास में सारंग और श्रीधर के अवैध संबंध को केवल नारी अस्मिता की दृष्टि से ही देखा जाना चाहिए किसी सामाजिकता, नैतिकता की कसौटी पर रखने के लिए नहीं|चाक उपन्यास में मैत्रैयी पुष्पा ने सारंग, रेशम जैसी अनेक स्त्रियों के द्वारा नैतिकता के बंधन से परे जाने की कोशिश की है | इन बंधनों को तोड़ने के पीछे लेखिका के सामने कई वजह है | रेशम केवल देह के ताप कारण नहीं, मातृत्व की आकांक्षा की पूर्ति के लिए शारीरिक संबंध स्थापित करती है| कोई पारिवारिक शोषण की वजह से ,तो कोई अपने अस्तित्व की पुकार की वजह से | इसलिए इन संबंधों को नैतिकता की कसौटी पर कसे जाने का विरोध लेखिका करती है | डॉ. वैशाली देशपांडे का कथन है- "सारंग समस्त उपन्यास में कई स्तरों पर लड़ती है, सबसे पहले अपने आप से, फिर अपने अंदर बैठी उस सुरंग से जो परंपरागत है, घर के सदस्यों से तथा गांव के लोगों से| सारंग का पति उसे वस्तु बनाकर रखना चाहता था, सारंग उससे संघर्ष करके अपने आप को व्यक्ति बना कर रखती है| ग्राम पंचायत के चुनाव में प्रधानपद के लिए खड़ी होकर वह पुरुष प्रधान समाज को भारी चुनौती देती है | पति से लेकर गांव का

ISSN 2454-2695
Volume 03 Issue 03
January 2017

समस्त पुरुष समाज और सामाजिक व्यवस्था उसका विरोध करते हैं, इस सत्ता को चुनौती देने के लिए वह अपने आत्माभिमान को जागृत करती है और उस से प्रेरित होकर गांव की समस्त स्त्रियों को संगठित करती है| इन नारियों के बल पर ही हुए चुनाव में भाग लेती है और विरोधियों को परास्त कर विजयी होती है| इस से यह विचार आता है कि जब तक अधिकार स्त्री के हाथ में नहीं आ जाते तब तक पुरुष समाज द्वारा उसका शोषण और उस पर होने वाले अत्याचार कभी खत्म नहीं हो सकते इन अत्याचारों को खत्म करने के लिए सबसे अधिक आवश्यक है कि सबसे पहले हम अपने अधिकार और स्वतंत्रता को हासिल करें |"[5]

उपन्यास में लेखिका ने सारंग के साथ-साथ अन्य महिलाओं को चित्रित किया है| सारंग के साथ-साथ गुलकंदी कलावती चाची, लौंगसिरि बीबी , जो उपन्यास की कहानी को आगे बढ़ाती है और सारंग की भी ताकत बन कर उसके साथ आकर खड़ी होती है | इसी संदर्भ में मधु सिंधु कहती है कि – "चाक की औरतें पुरुष समाज पर भारी पड़ रही है, कहीं देह के ताप के कारन, कही पुरुष-नारी के लिए के लिए बने अलग-अलग मानदंडों के कारण और कहीं अपने बौद्धिक विकास के कारण……सारंग चुनाव जीत कर अपने अस्तित्व और विद्रोह को सार्थक करने का संकल्प लिए हुए हैं |"[6]

ISSN 2454-2695
Volume 03 Issue 03
January 2017

स्त्री विमर्श की दृष्टि से चाक एक सशक्त उपन्यास बन पड़ा है और यह इस विमर्श की देशज प्रकृति का खुलासा करता है | जो पश्चिम से आया स्त्री विमर्श है, उससे अलग हटकर इस विमर्श को पढ़ी लिखी नौकरी पेशा बुद्धिजीवी स्त्री की सीमा से बाहर निकाल कर गांव और खेत खलिहानों में काम करती स्त्री से जोड़ती है | मैत्रैयी ने स्त्री विमर्श को केंद्र में रखकर सिर्फ चाक को उसी में सीमित पुष्पा नहीं किया है, समस्त गांव को उसकी विसंगतियों के साथ प्रस्तुत किया है |जातिवाद गंदी व स्वार्थपूर्ण राजनीति और उसके नाम पर विकृतियों का विस्तार और लोक संस्कृति के बचाव की लड़ाई सभी विषयों पर उन्होंने समान दृष्टि से ध्यान दिया है |मैत्रैयी पुष्पा अपने चारों ओर के जीवन के प्रति सम्मान दृष्टि रखती है, समावेशी दृष्टि रखती है और यही इस उपन्यास की जीवंतता है |

सन्दर्भ सूची :

१. डॉ. अर्जुन चव्हाण, विमर्श के विविध आयाम,वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली,२००८, पृष्ठ सं. २९

२. डॉ. मधु सिंधु, महिला उपन्यासकार, निर्मल पुब्लिकेशन्स, दिल्ली,२०००,पृष्ठ सं. ११३

३. मैत्रैयी पुष्पा, चाक,राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली,१९९७, पृष्ठ सं. १९

४. मैत्रैयी पुष्पा, चाक,राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली,१९९७ पृष्ठ सं. ३२९

ISSN 2454-2695
Volume 03 Issue 03
January 2017

५. डॉ. वैशाली देशपांडे , स्त्रीवाद और महिला उपन्यासकार, विकास प्रकाशन,कानपुर,२००७,पृष्ठ सं. १५९-१६०

६. डॉ.मधु सिंधु, महिला उपन्यासकार, निर्मल पुब्लिकेशन्स, दिल्ली,२०००,पृष्ठ सं. २२९

नीरजा सिंह (शोधार्थी)

८३, बाल विहार कॉलोनी,जोशी मार्ग के पास

कालवार रोड,झोटवाड़ा,जयपुर

राजस्थान,पिनकोड-३०२०१२, मोबाइल-९५३०१५७०३६